ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-6* Issue-12*January- 2022
Innovation The Research Concept

स्वामी विवेकानन्द का व्यवहारिक वेदान्त

Swami Vivekananda's Practical Vedanta

Paper Id: 15630,Submission Date: 10/01/2022, Date of Acceptance: 20/01/2022, Date of Publication: 24/01/2022

नन्दिनी सिंह
असि. प्रोफेसर,
दर्शनशास्त्र विभाग,
महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ
वाराणसी, भारत

सारांश

वर्तमान विश्व में भारतीय दर्शन हिन्दू-जीवन-दर्शन एवं एशियाई और पूर्वी देशों की सांस्कृतिक, धार्मिक एवं दार्शनिक विरासत की विश्वव्यापी स्वीकृति में सर्वाधिक महत्वपूर्ण भूमिका समकालीन भारतीय चिन्तक एवं दार्शनिक स्वामी विवेकानन्द जी की रही है। 1893 में वर्ल्ड पार्लियामेन्ट ऑफ रिलीजन, शिकागो में स्वामी विवेकानन्द ने भारतीय दर्शन, विश्ोष रूप से वेदान्त दर्शन के सम्बन्ध में जो वक्तव्य दिया उसने सम्भवतः प्रथम बार भारतीय जीवन-दर्शन और वेदान्त की दृष्टि को विश्व के सम्मुख बहुत प्रमुखता और प्रबलता से रखा। इसके अनन्तर उनके द्वारा अमेरिका एवं यूरोपीय देशों में लगातार दिये गये सम्भाषणों के द्वारा इस कार्य को और गति मिली। स्वामी विवेकानन्द द्वारा दिये गये इन सम्भाषणों को देखने से स्पष्ट होता है कि ये मूलतः वेदान्त की दृष्टि पर आधारित है। अतः वेदान्त के व्यवहारिक पक्ष को समझने से पूर्व यह जानना अनिवार्य है कि वेदान्त एक सिद्धान्त के रूप में क्या है। अतः वर्तमान एक सिद्धान्त के रूप में क्या है। अतः वर्तमान ल्ोख में वेदान्त के परिचयात्मक स्वरूप पर विचार करने के उपरान्त उसके अनुपयुक्त पक्ष को स्वामी विवेकानन्द जी की दृष्टि से समझने का प्रयास किया जायेगा।

In the present world, the most important role in the worldwide acceptance of Indian philosophy, Hindu philosophy of life and cultural, religious and philosophical heritage of Asian and Eastern countries has been played by the contemporary Indian thinker and philosopher Swami Vivekananda. The statement given by Swami Vivekananda in 1893 in the World Parliament of Religion, Chicago in relation to Indian philosophy, especially Vedanta philosophy He probably for the first time placed the Indian philosophy of life and the vision of Vedanta very prominently and strongly in front of the world. After this, this work got further impetus by the continuous speeches given by him in America and European countries. Seeing these speeches given by Swami Vivekananda, it is clear that it is basically based on the vision of Vedanta. Therefore, before understanding the practical side of Vedanta, it is necessary to know what Vedanta is as a theory. So what is the present as a theory. Therefore, after considering the introductory nature of Vedanta in the present article, an attempt will be made to understand its unsuitable aspect from the point of view of Swami Vivekananda.

मुख्य शब्दः हिन्दू-जीवन-दर्शन, स्वामी विवेकानन्द, वेदान्त, आध्यात्म, शाश्वत, चित्त,शांति, मनस-संतुलन, आदर्श, तत् त्वमसि, अनुप्रयुक्त पक्ष।

Keywords: Hindu philosophy of life, Swami Vivekananda, Vedanta, Spirituality, Eternal, Mind, Peace, Mind-balance, Ideal, Tatvamsi, Applied aspect.

प्रस्तावना

स्वामी विवेकानन्द इस बात पर भी आपत्ति करते हैं कि जीवन को धर्म से पृथक् करने की प्रवृत्ति ही अनुचित है। वेदान्त की शिक्षा भी यही है कि वह जीवन के हर क्ष्ोत्रा में एकत्व ;वदमदमेद्ध की बात करता है। अतः यदि वैचारिक रूप से कोई दर्शन है तो उसका प्रबल व्यवहारिक पक्ष भी होगा। एक ही सत् को हम विभिन्न दृष्टियों से देखते हैं। और यदि कोई ऐसा सिद्धान्त है जो व्यवहार में अनुपादेय है तो वह मानसिक व्यायाम मात्र है।

स्वामी विवेकानन्द 'व्यवहारिक वेदान्त' नामक अपने सम्भाषण में ऋषि पुत्र श्वेतकेतु एवं राजा प्रहवान जैवाली के बीच संवाद का उल्लेख करते हैं जिसमें राजा द्वारा ऋषि पुत्र से आध्यात्म विषयक प्रश्नों का उत्तर ना दिये जाने पर राजा ने स्वयं श्वेतकेतु और उसके पिता को उन प्रश्नों के उत्तर बताये और शिक्षा दी अतः स्वामी विवेकानन्द स्वयं स्पष्ट करते हैं कि वेदान्त की शिक्षा निष्क्रिय व्यक्ति के लिये नहीं है इसे उन लोगों ने धारण किया जो स्वयं शासक हो और सम्भवतः आज के युग के लोगों की अपेक्षा कहीं अधिक उत्तरदायित्वों का निर्वहन कर रहे थे और सांसारिक जीवन में सक्रिय थ्ो। यदि हम भगवद्गीता का सन्दर्भ ग्रहण करें तो वहाँ भी श्रीकृष्ण ने अर्जुन को सक्रियता और कर्त्तव्यपालन की शिक्षा दी। अर्जुन जिस मानसिक दुर्बलता में युद्ध नहीं करना चाह रहे थे वहाँ श्रीकृष्ण उन्हें तत्वबोध कराते हैं और ज्ञानपूर्वक कर्तव्य-कर्म के लिये तैयार करते हैं। अतः वेदान्त को केवल गुफाओं में पढ़े पढ़ाये जाने की शिक्षा मानना नितान्त भ्रामक है। स्वामी विवेकानन्द के अनुसार भगवद्गीता सक्रिय जीवन की शिक्षा है ल्ोकिन इस सक्रियता में आत्मिक शांति के भाव के साथ सक्रिय होने की बात निहित है।2 किंतु इसे निष्क्रियता रूप में नहीं लिया जाना चाहिये। स्वामी विवेकानन्द जिस सक्रियता की बात वेदान्त के सन्दर्भ में करते हैं उसके लिये दो बातें आवश्यक हैं-

1. शाश्वत चित्त शांति
2. मनस-संतुलन

स्वामी विवेकानन्द का स्पष्ट मानना है कि भावनात्मक आवेग में हम किसी कार्य में तत्परता से संलग्न तो हो जाते हैं लेकिन उसे अधिक समय तक नहीं कर पाते जबकि शांत चित्त से, भावनाओं के कम हस्तकक्षेप में हम बेहतर कार्य कर पाते हैं। भावनात्मक आवेग में हम अपनी ऊर्जा का सही और समुचित उपयोग नहीं कर पाते जबकि शांतचित्त से कार्य करने पर वही ऊर्जा हमारे कार्य की उत्पादकता को बढ़ा देती है। शांतचित्त ही मनस के संतुलन द्वारा बड़े से बड़े कार्य को निपुणता के साथ करता है।

वेदान्त को व्यवहारोपयोगी मानने में संदेह की सम्भावना इस कारण उत्पन्न होती है क्योंकि हम उसे सिद्धान्त एवं आदर्श मात्र मानते हैं। इस सम्बन्ध में स्वामी विवेकानन्द की स्पष्ट दृष्टि है।

स्वामी विवेकानन्द के अनुसार वेदान्त 'आदर्श' की शिक्षा देता है और मानव स्वभाव आदर्श के प्रति दो तरह की वृत्ति रखता है-

1. आदर्श को जीवन के साथ संयुक्त करने का प्रयास करना और
2. जीवन को आदर्श के स्तर तक ऊपर उठाने का प्रयास करना।

उपर्युक्त में जब हम प्रथम वृत्ति के अनुसार कार्य करते हैं तब आदर्श को अपने जीवन में ढालने की कोशिश करते हैं। हम जीवन के सुखों, स्वार्थ आदि को त्यागे बिना आदर्श को अपनाने की कोशिश करते हैं और यदि ऐसा ना हो सके तब उस आदर्श को ही अव्यवहारिक घोषित कर देते हैं। ल्ोकिन यदि कोई व्यक्ति ऐसे आदर्श को हमारे सम्मुख रखता है जो हमारे स्वार्थ और सुखाकांक्षाओं के साथ संगत है तो हम उसे व्यवहारिक बता कर ग्रहण कर ल्ोना चाहते हैं। अतः हम हर उस वस्तु को व्यवहारिक मानते हैं जिसे हम पसंद करते हैं और व्यवहार में लाते हैं।

स्वामी विवेकानन्द 'व्यवहारिक'शब्द के इस नितान्त खोखल्ोपन को उजागर करने के उपरान्त स्पष्ट करते हैं कि आदर्श के रूप में वेदान्त नितान्त आदर्शात्मक है फिर भी यह जीवनोपयोगी है, जीवन में अनुस्यूत है। वेदान्त का आदर्श है- "तत् त्वमऽसि"[3] यह वेदान्त का सार है। वेदान्त मनुष्य को आत्मविश्वास की शिक्षा देता है। स्वामी विवेकानन्द के अनुसार वेदान्त की मान्यता है कि जो मनुष्य स्वयं में विश्वास नहीं करता वह नास्तिक है।[4]

अपनी आत्मा के वैभव को ना पहचानना नास्तिक होना है। यहाँ विवेकानन्द कहते हैं कि यद्यपि लोगों को यह आदर्श वृहद् और अप्राप्य लग सकता होगा ल्ोकिन इस आदर्श को प्रत्येक व्यक्ति पा सकता है। क्योंकि यह आदर्श पहल्ो ही उपलब्ध है मात्र उसके बोध की आवश्यकता है।[5] वेदान्त जिस आदर्श को स्वीकार करता है वह हमारा स्वरूप है (अहं ब्रह्मास्मि) जो सदैव विद्यमान है ल्ोकिन हमने अपने ऊपर अज्ञानता का आवरण चढ़ा लिया है। प्रकाश सर्वत्र है हम नेत्रों को बंद करके अंधकार की शिकायत करते हैं। स्वयं को कमतर मानना, छोटा समझना, दुर्बल बताना हमें बंधन में डालता है। अतः इस मिथ्या दुर्बलता और न्यूनता को हटाकर उस वास्तविक जीवन को धारण करना है जो स्वयं देदीप्यमान है।

यहाँ प्रश्न उत्पन्न होता है कि क्या इस आदर्श को व्यवहार में सम्भव किया जा सकता है? स्वामी विवेकानन्द का स्पष्ट मत है कि यह आदर्श जितना गुफाओं और जंगलों में रहने वाले संन्यासी के लिये व्यवहार्य है उतना ही जीवन के किसी भी क्षेत्र में सक्रिय मनुष्य के लिये सत्य है।[6]

स्वामी विवेकानन्द का मानना है कि आदर्श को अपने जीवन के अनुरूप ढालने या जीवन की सामान्य इच्छाओं, सुख और स्वार्थ के साथ आदर्श को सायुज्य करने की सोच के स्थान पर जीवन को आदर्श के पटल तक उठाने की प्रवृत्ति होनी चाहिये। वेदान्त की शिक्षा एकत्व पर बल देती है। इस अर्थ में भी देखे तो "दो" का अस्तित्व ही नहीं है, ना दो जीवन का, ना दो प्रकार के जीवन (सामान्य एवं आदर्श) का और ना ही दो जगत का। अतः यदि "एक" ही है तो जीवन को उसके अनुरूप बना देने में ही सार्थकता है।

वेदान्त की व्यवहारिक जीवन में सबसे बड़ी उपादेयता आत्मविश्वास के रूप में देखी जा सकती है। मनुष्य जीवन पर्यन्त शरीर, बुद्धि, संसार को महत्व देता है और जो वास्तविक है, उसका मूलस्वरूप है, जिसे वेदान्त में साक्षी या आत्मरूप कहा गया है उसकी उपेक्षा करता है। किंतु स्वामी विवेकानन्द इस बात से आश्वस्त हैं कि जो आत्मा की ओर अभिमुख नहीं भी है वह जीवन के क्रम में कभी ना कभी बाह्य जीवन की निःसारता से निराश होकर आत्मा की ओर प्रेरित होता है। यहाँ स्वआत्मा से यह भ्रम नहीं होना चाहिये कि वह किसी प्रकार के स्वार्थ की बात कर रहे हैं क्योंकि स्वात्मा में विश्वास का अर्थ है सबमें विश्वास क्योंकि जो बहु के रूप में प्रतीत हो रहा है वह "तुम ही हो।" अतः स्वयं से प्रेम का अर्थ है सबसे प्रेम, स्वयं में विश्वास का अर्थ है सबमें विश्वास क्योंकि 'तुम ही सब हो।'[7]

पुनः वेदान्त विवेक की शिक्षा देता है जिसका एक व्यवहारिक मानक एकत्व है। व्यवहारिक जीवन में भी प्रत्येक वह वस्तु जो शुद्ध एकत्व है, सत्य है। प्रेम सत्य है, घृणा असत्य है। क्योंकि प्रेम जोड़ता है, घृणा मनुष्य को मनुष्य से बाँटती है।

स्वामी विवेकानन्द के अनुसार वेदान्त की शिक्षा है कि आत्मा शुद्ध चैतन्य है जिसमें शरीर, मन, संसार सब प्रतिबिम्बित होते हैं। आत्मा में और आत्मा के द्वारा ही हमारे समस्त अनुभव सम्भव होते हैं। अपने अनुभवों में से इस आत्मतत्व को हटा दें तो सारा संसार लुप्त हो जायेगा। यही वह है जो हमारे अनुभवों को सम्भव बनाता है। इसी पृष्ठभूमि में सब परिलक्षित होता है। समकालीन पाश्चात्य दार्शनिक जॉन आर सर्ल ने भी चेतना को ऐसी पृष्ठभूमि के रूप में स्वीकार किया है जो हमारे समस्त अनुभवों को सम्भव बनाता है।[8] लेकिन वेदान्त में आत्मा ना केवल ऐकमेव है बल्कि इस रूप में ईश्वर भी है। स्वामी विवेकानन्द कहते हैं कि वेदान्त का ईश्वर सबसे अधिक, सबके द्वारा जाना जाने योग्य है। क्योंकि यह आत्मा से भिन्न नहीं है और इस आत्मा में ही सब प्रतिबिम्बित है।[9]

स्वामी विवेकानन्द के अनुसार इससे अधिक व्यवहारिक ईश्वर की कल्पना असम्भव है। उनके शब्दों में-

"इससे अधिक व्यवहारिक ईश्वर कहाँ होगा, जिसे मैं अपने समक्ष देखता हूँ, सभी में उपस्थित सर्वत्रा विद्यमान ईश्वर, जो हमारी इन्द्रियों से अधिक वास्तविक है? क्योंकि तुम ही वह हो, सर्वत्रा, सर्वशक्तिमान ईश्वर।"[10]

स्वामी विवेकानन्द के अनुसार वेदान्त के इस अनुपयुक्त पक्ष को जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अनुभव किया जा सकता है किंतु इसके लिये शांतचित्त, मन के संतुलन और धौर्य की आवश्यकता है। यहाँ वह बुद्धि से अधिक हृदय की निर्मलता को महत्व देते हुये कहते हैं कि सत्य का दर्शन हृदय से होता है बुद्धि से नहीं। बुद्धि सत्य के स्वरूप को समझ सकती है, मार्ग के अवरोधों की सफाई कर सकती हैलेकिन चित्त की शुद्धता, जिससे सत्य का साक्षात्कार सम्भव है, हृदय ही करता है। स्वामी विवेकानन्द का स्पष्ट कथन है कि पुस्तकें और उपदेश बुद्धि की समझ बढ़ा सकते हैं उसके भ्रम को हटा सकते हैं लेकिन इसके आगे इसकी गति नहीं है, वास्तविक सहायक हृदय है, प्रेम है। यदि दूसरों के प्रति प्रेम, सहयोग, सहभाव है तो यह एकत्व की दिशा में कार्य करता है। "पुस्तक में अच्छे चरित्र का वर्णन बढ़ने से वह हमारे आचरण का प्रमाण नहीं बन सकता लेकिन अच्छा आचरण पुस्तक को प्रमाणित करता है।"[11] बुद्ध अथवा ईसा मसीह का प्रमाण हमारे लिये यह है कि हम उनके जैसा अनुभव कर सकते हैं। हमारे अंदर का दैवत्व/ईश्वरत्व, ईश्वर का प्रमाण है। अन्यथा वह हमारे लिये कल्पना मात्र है। यदि तुम स्वयं ईश्वर नहीं हो तो ना तो कभी ईश्वर था और ना हो सकता है। वेदान्त इस आदर्श की बात करता है। अतः वेदान्त एकमेव सत् की बात करता है और अपने अंदर इस सत् को अनुभूत करने को कहता है क्योंकि इसी के द्वारा और इसके भीतर ही यह सारा बाह्य संसार उत्पन्न है। अतः इस दिव्य सत् को जान लेने से अधिक व्यवहारिक एवं उपयोगी किसी और सिद्धान्त की चर्चा नहीं की जा सकती।

अध्ययन का उद्देश्य

अतः वेदान्त जिस आध्यात्म की शिक्षा देता है क्या वह केवल सैद्धान्तिक है? यदि हम स्वामी विवेकानन्द जी के जीवन-दर्शन को देखें तो ऐसा कदापि नहीं है। वेदान्त सक्रिय-जीवन की शिक्षा देता है लेकिन सक्रियता किस दिशा में और किसलिये है यह महत्वपूर्ण है। उपनिषद, गीता आदि वेदान्त के आधारस्तम्भ हैं। यदि हम उनका सन्दर्भ भी ग्रहण करें तो यहाँ वेदान्त की शिक्षा ऐसे लोगों को दी गई है जो पूरी तरह संसार में सक्रिय है। संन्यासी अथवा वैरागी के लिये वह शिक्षा जितनी महत्वपूर्ण है उससे कहीं अधिक महत्वपूर्ण यह उन लोगों के लिये है जो सांसारिक कार्यों में लिप्त हैं। वेदान्त निष्क्रियता के जीवन की शिक्षा नहीं देता। स्वामी विवेकानन्द स्वयं कहते हैं कि 'यदि कोई ज्ञान सैद्धान्तिक मात्र है और हम व्यवहार में उसे उपयोग में नहीं ला सकते तब वह मानसिक व्यायाम मात्र है।'[1]

निष्कर्ष

अतः कहा जा सकता है कि वेदान्त दर्शन को जिसे हम आदर्श या सिद्धान्त मात्र के रूप में जानते हैं उसेव्यवहार में सर्व उपयोगी रूप में पुनः स्थापित करना एवं जीवन के एकमेव सत् की अनुभूति को नित्य प्रति के कर्मों में अभिव्यक्त करना और आदर्श को व्यवहार (सुख, स्वार्थ आदि के साथ समन्वय के रूप में) की कसौटी पर परखने की बजाय, व्यवहारिक जीवन को उस आदर्श तक ऊपर उठाने की जो दृष्टि स्वामी विवेकानन्द ने दी है वह स्वयं में विशिष्ट है। बल्कि स्वामी विवेकानन्द के मत में वेदान्त ही भावी जीवन का सर्वोपयोगी दर्शन है क्योंकि यह हमारे बौद्धिक, भौतिक, धार्मिक और आध्यात्मिक जीवन को एकसूत्रता में बाँधता है और विभेद के स्थान पर अभेद को स्थापित करता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *"If it be absolutely impracticable, no theory is of any value whatever, except as intellectual gymnastics. Swami Vivekanand, Practical Vedanta, Advaita Ashram, Calcutta, 1970, p. 1*
2. *".....Gita is intense activity, but in the midst of it, eternal calmness. This is the secret of work, to atain which is the goal of the Vedant. Inactivity, as we understand it is the sense of passivity, certainly cannot be the goal." - Ibid, p. 3*
3. *छान्दोग्योपनिषद*
4. *".....Vedanta says, a man who does not believe in himself is an atheist." - Ibid., p. 3*
5. *".....Vedanta shows that it is realised already, it is already there." - Ibid., p. 7*
6. *"There is but one life, one world, one existence, everything is that one, the difference is in degree and not in kind." - Ibid., p. 11*
7. *"It means faith in all, because you are all. Love for yourself means love for all." - Ibid., p. 18*
8. *Searl, John R., The rediscovery of Mind.*
9. *अष्टावक्र गीता*
10. *Swami Vivekanand, Practical Vedanta, Advaita Ashram, Calcutta, 1970, p. 25*
11. *Ibid., p. 29*